

श्रीप्रियाजी से प्रियतम का विनोद

एक बार आनन्दकन्द श्रीकृष्णचन्द्र आनन्दिनी श्रीवृषभानु नन्दिनी अपने प्रियतम की उरमणि में अपना प्रतिबिम्ब देखकर मुग्ध स्वभाव से भोरे-भोरे वचन कहने लगी-“देख री देख सखी प्रियतम की करतूत ! ये मेरे सामने अपने प्रेम की कितनी डींग हाँकते हैं ? तू भी दिनरात न जाने क्या रिश्वत लेकर उन्हीं की तारीफ और चापलूसी करती रहती है । देखने इनके गुण ! आज तो हमारे सामने ही चन्द्रावली को गोद में लेकर हमें चिढ़ा रहे हैं । अब रत्तीभर भी शर्म संकोच नहीं रहा ।” नन्दनन्दन श्यामसुन्दर ने मन्द मन्द मुस्कराकर सखी से कहा-“प्रिय सखि ! इसमें मेरा क्या अपराध है ? मैं गौओं को चराकर अपनी मौज में अपने रास्ते से बिना किसी से छेड़छाड़ किये, बिना नूपुर बजाये, बिना बाँसुरी पर तान छेड़े, कहीं कोई सखी मेरे पीछे न लग जाय इसलिये दबे पाँव प्यारी जू के दर्शनों के लिये भूखा प्यासा चला आ रहा था । इतने में ही यह न जाने कहाँ से मेरे पीछे पड़ गयी और हाथ जोड़कर पाँव पड़कर आर्द्र नेत्र से प्रार्थना करने लगी कि मैं श्रीवृषभानु दुलारी, आप की प्राण प्यारी के दर्शनों की प्यासी हूँ । मुझे शीघ्र-से-शीघ्र उनके पास ले चलो; मैं उनकी दासी बनकर सब प्रकार की सेवा करूँगी । मुझे उनसे जल्दी मिला दो ।” मैंने इससे अपना पल्ला छुड़ाने की बहुत कोशिश की इधर-उधर भागा; लेकिन यह भी एक ही है ।

बस, झपट कर मेरे वक्षस्थल से लिपट ही तो गयी, गोंद की तरह चिपट गयी । इसमें मेरा क्या दोष है ? हृदय की भोरी रस की बोरी श्रीवृषभानु किशोरीजी ने तपे स्वर्ण के समान कुछ तमककर कहा-“सुन री सखी सुन ! इनके मस्तक की एक-एक नस में कोटि-कोटि वकील बैरिस्टर भरे हैं । हम भोरी-भोरी मुग्धस्वभावा ब्रजांगनाओं से इतनी चतुराई करने की क्या ज़रूरत है ? तुम भरमाते हो तो भरमाओ, मैं तो तुम्हारी बात सत्य मानती हूँ ।” युगल सरकार के ऐसे मधुर-मधुर चोज़ भरे लाड़-प्यार, उलहना एवं कटाक्ष से सने वचन सुन कर वह वात्सल्य की देवी कहने लगती है । ‘मेरी प्यारी ललित लड़ैतीजू ! हृदय में झूठे सन्देह को सदेह मत करो ।’ अरी अरी मुग्धे ! स्नेहोन्मत्ते, प्रियतम के हृदयमणि में तुम्हारी ही झाँकी झिल-मिला रही है । वह चन्द्रावली नहीं श्रीराधाचन्द्रन्द्रिकावली है । मैं शपथ पूर्वक कहती हूँ, प्रियतम के दिल दुलही की तुम ही दूलह हो ! हृदयधन की स्वामिनी हो, मनमोहन के मनोहर मन-मन्दिर की मन भावती जीती-जागती आराध्य देवी हो । इनका हृदय तो तुम्हारे अविचल प्रेम का सिंहासन है और तुम उस पर विराजमान होकर शासन करने वाले एकछत्र अमर सम्राट हो । यह दासी, सखी और वात्सल्यवती देवी क्षण-क्षण युगल को नवीन-नवीन हृदय रस, स्नेह-सुधा का पान कराती रहती है । यह वात्सल्य रस है ।

ऐसी पवित्रता भाव और सनेह की मूर्त देवी ही युगल के

मधुमय, रसमय, लास्यमय, प्रेममय, हास-विलास, मान-मनावन
आँखमिचौनी, मिलन आदि का दर्शन करती करती स्वयं भी उसी
रस में पग जाती है । सनेह की धारा परिपक्व होकर भावशावल्या
से जमकर प्रेम की रईसे मथी जाकर शृंगार रसस्वरूप घृत के रूप
में प्रकट होती है । इस अवस्था में युगल के प्रति इतना अनुराग
होता है कि विछोह की कल्पना भी अकल्पनीय अनल्प संकल्प-
विकल्पों का जाल बिछा देती है । हृदय में व्याकुलता और
मुख में जल्पनायें, शरीर से सभी कार्य युगल के कुशल और मिलन
के लिये होते हैं । एक आकांक्षा, एक उत्कण्ठा, एक ही भूख-
प्यास, युगल सर्वदा मिले रहें, प्रसन्न रहें, क्रीड़ावारिधि में अनंग-
तरंगों से रंगरलियाँ करते हुए उमंग में भरे रहें, अनुराग के
रंग में रंगे रहें, प्रीति के पन में परस्पर एक दूसरे को पछाड़ते रहें,
प्रेम का प्रकाश हो, रस का विकास हो, क्रीड़ा का उल्लास हो,
आनन्द का निवास हो । इस अवस्था में पहुँचकर वात्सल्य की
कञ्चुकी खुलकर स्वयं ही गिर जाती है । एक परम सुभग, परम
सुन्दर, परम मधुर षोडशी किशोरी का दिव्य चिन्मय शरीर
निखर आता है । वह शृंगार रस में पूर्ण और प्रियाप्रियतम को
रिझाने वाला होता है । उस पर दृष्टि पड़ते ही युगल रसावेश
में झूमने लग जाते हैं । वह षोडशी सुकुमारी किशोरी देखती
है कि युगल किशोर संयोग शृंगार-विहार में परस्पर एक दूसरे
पर राशि-राशि रूप सौन्दर्य का गुलाल बिखेर रहे हैं । परन्तु
नेत्रों में किर-किरी नहीं होती । प्यासे-प्यासे, मद भरे, अमृत भरे,

रतनारे ललित-ललित लोचन परस्पर रूप मधु-माधुरी का पान कर रहे हैं । विविध सुगन्ध दिव्य पदार्थादि से संयुक्त ताम्बूल परस्पर एक दूसरे के मुख से लेकर आस्वादन कर रहे हैं । एक दूसरे की नासिका एक दूसरे के दिव्य सौरभ से पग रही है । इतर का उपयोग करने पर भी उसका कहीं पता नहीं चलता । अधरों पर मन्द-मन्द मुस्कराहट, बीच-बीच में शरदचन्द्रविनिन्दक अमन्द हास्य, परस्पर एक दूसरे के मुख से वचनपुष्पों की ऐसी वर्षा मानों कल्पवृक्ष के सुकुमार कुसुमों की झड़ी लग रही हो । दोनों ही चाहते हैं कि बस, हम दोनों कानों के दोनों से इस कुसुमासव का पान करते ही रहें । परस्पर कमनीय कोमल कलेवर के सुखद संस्पर्श से दोनों ही विपुल पुलकावली-प्रफुल्लित हो रहे हैं, सीत्कारपूर्वक सिहरन का अनुभव कर रहे हैं । दोनों का ही मन आनन्द सुधा निधि में मग्न होकर तटस्थ बुद्धि को अनंग-रस-तरंग-रंग से सराबोर कर नेत्र-से-नेत्र, कपोल-से कपोल अधर-से-अधर, वक्षःस्थल-से-वक्षःस्थल मिलाकर सर्वांग परि-रम्भन परस्पर मोदक आदि महाभावों का अनुभव, रभस-बलित केलिकौतूहल, कटाक्ष-निक्षेप एवं पररस्परालम्बन, ललित-लावण्यनिधि निर्द्वन्द्व दम्पति उद्दाम लीला को उद्दीप्त कर रहा है ।”

युगलसरकार की नित्यनूतन कमनीय क्रीड़ाएँ देख-देख कर श्रृंगार रसासक्त एवं गोपीभावमग्ना देवी आनन्द के महासमुद्र में डूबती उतरती रहती है । यह श्रृंगार रस है ।

भगवान् श्रीकृष्ण ने गीता में जिस ज्ञानी की बड़ाई की है वह इसी युगल मधुर रस का ज्ञानी है । उसमें अपना सुख स्वार्थ नहीं है । यह तो कहना ही क्या, उसे तो अपनी ही याद नहीं है । उसे युगल धाम, युगल रूप, युगल लीला, युगल सेवा, युगल सुख, के अतिरिक्त और किसी बात का स्फुरण ही नहीं है ।

श्रीटहल्यारामजी ने इस प्रसंग का श्रवण करके आनंद में डूबते उतराते हुये गद्गद् कण्ठ से कहा - “श्रीस्वामीजी ! इस रस को अनुभव करने की मेरी बड़ी लालसा है, आप कृपा करके अनुभव कराइये ।” इस पर श्रीस्वामीजी ने कहा- “आप मान प्रतिष्ठा आदि का भाव त्याग कर बालक के समान सरल, निश्छल होकर पाँच वर्ष मीरपुर के सत्संग में निवास कीजिये और तन, मन, वचन से आज्ञा के अनुसार साधन कीजिये । सद्गुरु नानक-देव की कृपा से आपको रस का अनुभ हो सकता है ।”

श्रीटहल्यारामजी ने कहा- “बाबा साहब, मैं बूढ़ा हूँ । मेरे ऊपर दरबार के बड़े बूढ़े हैं, सत्संगी हैं । मैं लगातार पाँच वर्ष मीरपुर के सत्संग में कैसे रह सकूँगा ? इसलिये कृपा करो, मैं लगातार बारह महीने तक रहूँगा और तन, मन, वचन से आपकी आज्ञा का पालन करूँगा कोई बाहरी इच्छा न करूँगा । पाँच वर्ष की क्या बात है, मैं तो जीवन भर आपके पास आता जाता रहूँगा । यह बात उन्होंने एक कागज पर लिखकर अपने हस्ताक्षर कर दिये ।

इसके बाद श्री टहल्यारामजी बारह महीने तक श्रीमीर-

पुर के सत्संग में रहे । तन, मन, वचन से श्रीस्वामीजी की आज्ञा का पालन और सत्संग करते रहे । उनके प्रेम की अवस्था बहुत ऊँची चढ़ गई, उन्हें दिन रात श्रीअयोध्या ही अयोध्या सूझती थी । बारह महीने के बाद थले के श्रीदरबार साहब में चले गये; परन्तु बराबर जीवनभर श्रीस्वामीजी के पास आते जाते और सत्संग से लाभ उठाते रहे ।

जोही ग्राम के महात्मा श्री भगतराम जी बड़े ही शान्त और ब्रह्मानन्दी थे । श्री स्वामीजी ने उनके पास जाकर श्रद्धा से मस्तक झुकाकर चरण स्पर्श करने की चेष्टा की । श्रीभगतराम जी ने उनके दोनों हाथ अपने हाथ में ले लिये और बोले-“आप तो भक्तराज हैं, भगवान के अत्यन्त प्यारे बच्चे हैं ।” श्रीस्वामी जी ने बड़ी नम्रता से कहा-“आप ज्ञानवन्त हैं, प्रभु के बड़े बेटे हैं, हमारे पूज्य हैं ।” श्रीभगतरामजी ने प्रसन्न होकर श्रीस्वामीजी को हृदय से लगा लिया । यह ब्रह्मानन्द और प्रेमानन्द का अद्भुत मिलनअत्यन्त ही आनन्द दायक दृश्य था । बातचीत के प्रसंग में श्रीभगतराम जी ने कहा-“भक्तजन किन-किन गुणों को धारण करते हैं, जिससे वे प्रभु के अत्यन्त प्यारे बन जाते हैं ?”

श्रीभक्तकोकिलजी ने कहा--

9-अपनी क्रिया से किसी का अनिष्ट न हो, अपने वचन से किसी को कष्ट न हो, अपने मन में किसी का अनिष्ट चिन्तन न हो, किसी भी प्राणी को दोषी, नीच और घृणास्पद न समझना ।

गुरुजनों के सामने किसी प्रकार की धृष्टता का वर्ताव न करें;
अतिसज्जनरीति से सत्संग में रहें, दुष्ट संग न करे ।

२-मान, प्रतिष्ठा, बड़ाई, यश से बचना । क्योंकि
इनसे अभिमान बढ़ता है । किसी से घृणा न करना, विषयों की
प्राप्ति होने पर उनमें सुख न मानना । क्योंकि झूठ, चोरी, हिंसा,
व्याभिचार आदि दुर्गुणों का मूल यही है ।

३-प्रियतम की ही बात करनी और कोई बात करनी पड़े
तो सच्ची, प्रिय, निश्छल, हितकारी, थोड़ी और मौके की ही
करनी चाहिये, नीरस और व्यर्थ बात कभी नहीं करनी
चाहिये । पवित्र भोजन करना चाहिये । भोजन की पवित्रता
ईमानदारी की कमाई में हैं । यह भक्तिरस से पूर्ण विग्रह (शरीर)
पर अनुग्रह करना है । परगुणों में प्रीति, अपने को दोष रहित
न जानना, बुद्धि में निपुणता और गम्भीरता, मन में निर्मलता,
प्राणों में प्यास, चित्त में भोलापन, धर्म में तत्परता, दान में
उत्साह ।

४-भगवान् सर्वज्ञ, सर्व शक्तिमान्, परम कृपालु, परम मधुर
सुन्दर भक्त वत्सल और प्रेम परवश हैं- ऐसा निश्चय हो । प्रभु
शक्ति, प्रेम और ज्ञान के अनन्त समुद्र हैं । मैं उनका एक बिन्दु
मात्र हूँ । वे यन्त्री हैं, मैं यन्त्र । वे भोक्ता हैं, मैं भाग्य । वे आत्मा
तो मैं शरीर । इस प्रकार मन में सोचते रहना । उनके नाम, धाम,

रूप, लीला, गुण, सेवा, स्वभाव आदि का चिन्तन, श्रवण, वर्णन ।
अपने अपराधोंके लिये प्रभुके सामने तोबा करना ।
हृदय में प्रेम की तीव्र लालसा और उसके लिये व्याकुलता ।
इसके लिये हृदय से रोना और आँखों में आँसू लाना । सबकी
वन्दना करना, परन्तु मन में एक ही रखना, जैसे सती । दिनों
दिन प्रेम की वृद्धि होना ।

ऐसे मधुर गुणों से युक्त भक्त प्रभु को अपनी आत्मा से भी
अधिक प्रिय है । वह सभी का पूज्य है । वह किसी भी जाति में
हो, किसी भी वेश में हो, कहीं भी हो, उसका प्रसाद पाकर जीव
बिना जप-तप के भी प्रभु से मिल जाता है और वैकुण्ठादि लोकों
का आनन्द प्राप्त करता है । रसिकराज श्रीरघुनाथजी ने भी जब
सिद्धा शबरी भीलनी के जूठे बेर खाये तब श्रीप्रियतमा का पता
प्राप्त हुआ और विछोह की बाधा दूर हुई ।” यह सुन कर
महात्मा जी बहुत प्रसन्न हुये ।

मांझाद ग्राम के महन्त बाबा देवीदास जी से श्रीभक्त-
कोकिलजी की बड़ी घनिष्टता थी । उनके आग्रह से श्रीस्वामीजी
कभी-कभी जाकर उनके पास रहते थे । बाबा देवीदास जी बड़े
ही गुरु भक्त थे । रात-रात भर श्रीगुरुदेव की समाधि के पास
बैठकर रोया करते थे । श्रीस्वामीजी के मुख से किसी गुरु-भक्त
की कथा सुनकर उनकी आँखों से आँसुओं की झड़ी लग जाती
थी । श्रीस्वामीजी वहाँ प्रातःकालीन भजन से उठकर श्रीशिव-
मन्दिर में जाते और अपने हाथों से झाड़ू लगाकर मन्दिर की

सफाई करते जाते और मधुर-मधुर स्वर में गीत गा-गाकर
भगवान् शंकर की स्तुति करते --

अवढरदानि भोला सुन बीनती हमारी ।
हर हर गिरजावर शंकर त्रिपुरारी ॥
दानि शिव दिगम्बर गिरीश ईश जगदीश्वर,
भाँग औ अफीम खाओ हिमालय विहारी ॥
शंकर उर करहूं वास दुर्दिन नहीं आवैं पास,
शोकहर अशोककर शब्द सुरति प्यारी ॥
गंगाधर आनन्दधर चन्द्रमौलि उमावर,
गौरीशंकर कर सत्संग 'भैरव' रखवारी ॥

एक बार मांझाद में सन्त समागम हुआ । वहाँ भक्त
कँवरराम जी आये । भक्त कँवरराम सिंध के प्रसिद्ध भक्तों में से
एक हैं । उनके कण्ठ में मुरली की सी मिठास थी । वे अपनी
मण्डली के साथ नृत्य करके प्रभु गुणानुवाद के पद गाते थे ।
उनका गान सुनने के लिए लाखों स्त्री-पुरुष इकट्ठे हो जाते
और लाखों रुपये भेंट चढ़ते । वे इतने निःपृष्ठ थे कि भेंट के
रुपये और वस्तुएँ गरीब हिन्दू-मुसलमानों को बाँट देते थे ।
स्वयं चने बेचकर जीवन निर्वाह करते थे । श्रीभक्त कोकिलजी
से उनकी बहुत प्रीति थी । वे श्रीभक्त कोकिलजी से मिलने के
लिये मीरपुर भी आते थे । श्रीभक्त कोकिलजी भी उनसे मिलने
के लिये अपनी मण्डली के साथ उनके पास उनके गाँव गये थे ।

